ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 12, December 2016

पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में गांधी जी के विचारो की उपादेयता

आशा नागर

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान, राजकीय महाविद्यालय, देवली (टोंक)

सार

गांधी जी का पर्यावरण संबंधित एक महत्वपूर्ण वक्तव्य है कि 'हमारी धरती अपने सभी जीवों की आवश्यकताओं की पूर्ति तो बखूबी कर सकती है, लेकिन उनकी लालच और हवस की पूर्ति कतई नहीं कर सकती। उन्होंने बताया था कि पृथ्वी, वायु, भूमि तथा जल हमारे पूर्वजों से प्राप्त सम्पत्तियाँ नहीं हैं। वे हमारे बच्चों की धरोहरें हैं। महात्मा गांधी यद्यपि कोई पर्यावरणविद नहीं थे तथापि प्राकृतिक नियमों के अनुरूप वे एक ऐसी जीवन पद्धति के पक्षधर जरूरत थे जो नैसर्गिक रूप से पर्यावरण संरक्षण के हितैषी हो। खादी, अहिंसा, स्वच्छता और सफाई का उनका रचनात्मक कार्यक्रम उनके राजनीतिक जीवन का अभिन्न अंग था और यही कारण है कि उनके शाश्वत जीवन मूल्य आज भी विश्व भर में सराहे जाते हैं। फिर भी महात्मा गांधी जैसे युग पुरुष ने पर्यावरण प्रदूषण संबंधी खतरे को समय से पूर्व ही महसूस कर लिया था। पर्यावरण संरक्षण के संबंध में हम कह सकते हैं कि गांधी जी का जीवन ही उनका संदेश था। उन्होंने अपने जीवन में नैसर्गिक सिद्धांतों को अपनाया तथा प्रकृति के प्रतिकूल किसी भी अवधारणाओं को अनुचित ठहराया यहां तक कि गांधी जी ने प्राकृतिक उपचार को ही शारीरिक रोगों से मुक्ति पाने का सर्वोत्तम उपाय। गांधीजी ने कहा अपनी भावी पीढ़ियों के हित चिंतन के बिना धरती को विनाश के कगार पर पहुंचा देना खुलेआम हिंसा का प्रदर्शन है। हमें अपनी जरूरतों का नियमन करना चाहिए और स्वेच्छापूर्वक अभाव भी सहना चाहिए। मानवहित प्रकृति के साथ समरस होने में है ना कि उस पर आधिपत्य चलाने में। गांधीजी चाहते थे कि आधुनिक तकनीक मानव केंद्रित प्रकृति संगत बने प्रकृति के साथ उसका विरोधाभास ना हो और वह मनुष्य की सर्जनशीलता के अनुरूप हों ।

पर्यावरण के उदाहरण के संदर्भ में गांधी जी ने प्रकृति को याद दिलाते हुए हमें सावधान किया था कि प्रकृति हर मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है। किंतु किसी एक भी मनुष्य के लोग को पूरा करने की इसमें क्षमता नहीं।

मनुष्य की अशुभ मनोवर्तीयां, कर्तव्य विमुखता, स्वार्थी मनोवृति, भ्रष्ट आचरण, अवसरवादीता के रूप में अनार्जीत आय को प्राप्त करने की भावना सुविधावाद, असीमित इंद्रिय भोग एवं वासना के मनोविकारो से जब व्यक्ति और समाज पीड़ित होता है तब वह प्रकृति के प्रति क्रूर एवं हिंसक होकर उससे प्रतिक्षण लेता ही रहता है, परिणामस्वरूप पर्यावरण शुद्धता एवं प्राकृतिक संतुलन भंग हो जाता है। मेरा जीवन ही मेरा संदेश है के द्वारा वास्तव में वे संयम व प्रकृति के भेद प्रेमभाव को ही प्रतिष्ठित करने का प्रयास करते थे। गांधीजी ने प्राणी मात्र के प्रति समभाव का निरूपण करते हुए सरलता सादगी तथा इंद्रिय संयम को महत्वपूर्ण माना था। गांधी जी के दर्शन का स्वरूप सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय का प्रतिपादन करना प्रतीत होता हैं। सर्वोदय भावना का मूल मंत्र भी यही है कि सभी प्राणियों का कल्याण एवं मंगल हो सभी निरामयी हो किसी को दुख कष्ट न हो। गांधी जी की यह सर्वोदय भावना सत्य,अहिंसा, प्रेम,सहयोग एवं सद्भावना जैसे नैतिक गुणों से ओतप्रोत है तथा उनका यह अहिंसक विचार पर्यावरण आचार संबंधी स्पष्ट दिशा-निर्देश देने से सक्षम है। गांधीजी के ग्राम स्वराज्य का चिंतन भारतीय परिस्थितियों के सर्वथा अनुकूल रहा है। क्योंकि भारत की आर्थिक व्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित रही है।

परिचय

अतः ग्राम से ही आर्थिक एवं बौद्धिक उन्नति का चिंतन **पर्यावरण संतुलन** के मार्ग को प्रशस्त रखने की क्षमता रखता है तथा भारतीय परिप्रेक्ष्य में कृषि एवं इससे संबंधित क्रियाकलाप ही श्रेय हैं। गांधी जी ने भारतीय अर्थव्यवस्था को गौ अर्थव्यवस्था कहा क्योंकि यह व्यवस्था पशु व मनुष्य के अटूट रिश्ते पर टिकी थी। आज भी छोटे-छोटे कृषि जोतों के लिए आज भी हल और बैल का सहारा लिया जाता है। जब भी रसायनिक एवं यांत्रिक कृषि के विकल्प की बात उठती है लोगों का ध्यान पारंपरिक खेती बाड़ी की स्वस्थ परंपराओं और प्राकृतिक क्रियाओं की ओर जाता है। अनियंत्रित औद्योगीकरण के प्रति गांधी जी का विरोध सर्वविदित है।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 12, December 2016

मशीनीकरण के अतिवादी समर्थक तो उनको औद्योगीकरण का शत्रु ही समझते रहे लेकिन उन्होंने कभी यह नहीं कहा कि औद्योगिकरण निरर्थक है। उनका आग्रह केवल इतना था की यंत्रीकरण की सारी योजनाओं में मनुष्य का स्थान सर्वोपरि हों[1]

औधोगिक क्रांति, उसकी कोख में जन्मा केंद्रित पूंजी साधन उधोगवाद, उसके बाद उसका दिग्विजय अभियान, फलत औधोगिक देशों द्वारा सम्पन्न, विश्व युद्दो की त्रासदियां, उपनिवेशों में स्वाधीनता का आगमन, विकास के नाम पर नवस्वाधीन देशों में विकसित देशों के भस्मासुरी कार्यक्रमों एवं परियोजनाओं का कार्यान्वयन आदि के द्वारा कृषिय ढांचे का बेरहमी से औपनिवेशिकरण किया गया। गांधी जी का चिंतन था कि ग्रामीण परिवेश के अनुरूप सरल प्रौद्योगिकी प्राकृतिक सौंदर्य ही मानवीय अस्तित्व के लिए उपयुक्त है।

आज राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में पर्यावरण विमर्श द्वारा समस्या समाधान के लिए याचिक सक्रियता तेजी ला रही है। वर्तमान स्थिति को देखते हुए पारिवारिक एवं श्रम न्यायालयों की तर्ज पर जल्दी परिवार न्यायालय स्थापित कर न्यायिक सक्रियता व पर्यावरण विमर्श के माध्यम से पर्यावरण नैतिकता कायम करने की अतिशीघ्र जरूरत है।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में प्रयोग पंचायते एवं पर्यावरण परिषदे गठित की जानी चाहिए जो राजनीतिक व राजनीतिज्ञो से वन व पर्यावरण संरक्षण प्रेमियों व पर्यावरणीय नैतिकता युक्त उत्तरदायित्व प्रशासकों से मिलकर बने भारतीय धर्म व संस्कृति के पर्यावरण में धार्मिक आस्थाओं को केंद्र में रखकर भूमंडलीय व स्थानीय पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान योग्य जन सहभागिता के माध्यम से ढूंढे।[2]

गांधीजी का पर्यावरण के प्रति जो दर्शन रहा है उनके चिंतन एवं प्रयोगों में बहुधा दिखता रहा है। खाद्य, स्वदेशी, शरीर श्रम, लघु एवं कुटीर उद्योग, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, कृषि प्रधान जीवन, गौ संरक्षण, बुनियादी तालीम आदि मौलिक चिंतन ने विभिन्न प्रकार से ना केवल तत्कालीन मानव समाज एवं पर्यावरण को विशुद्ध रखने का प्रयास किया है अपितु वर्तमान समस्याओं के संदर्भ में भी मार्गदर्शन करने की क्षमता बनाए रखता है। 1987 में ब्रुंडलैंड कमीशन रिपोर्ट के सामान्य भविष्य के विचार से बहुत पहले ही महात्मा गांधी ने स्थिरता और सतत विकास के लिए लगातार बढ़ती इच्छाओं और जरूरतों के अधीन आधुनिक सभ्यता के खतरे की ओर ध्यान दिलाया था। अपनी पुस्तक **"द हिंद स्वराज"** में उन्होंने लगातार हो रही खोजों के कारण पैदा हो रहे उत्पादों और सेवाओं को मानवता के लिए खतरा बताया था। उन्होंने वर्तमान सभ्यता को अंतहीन इच्छाओं और शैतानिक सोच से प्रेरित बताया। उनके अनुसार, असली सभ्यता अपने कर्तव्यों का पालन करना और नैतिक और संयमित आचरण करना है। उनका दृष्टिकोण था कि लालच और जुनून पर अंकुश होना चाहिए। टिकाऊ विकास का केंद्र बिंदु समाज की मौलिक जरूरतों को पूरा करना होना चाहिए। इस अर्थ में उनकी पुस्तक "द हिंद स्वराज" टिकाऊ विकास का घोषणापत्र है। जिसमें कहा गया है कि आधुनिक शहरी औद्योगिक सभ्यता में ही उसके विनाश के बीज निहित है।[11]

उचित उपचार और उपायों के जरिए वायु प्रदूषण को रोकना स्थिरता और टिकाऊ विकास का आवश्यक पहलू है। यहां यह ध्यान देने योग्य है कि महात्मा गांधी जब 1913 में दक्षिण अफ्रीका में अपने पहले सत्याग्रह आंदोलन की अगुआई कर रहे थे तभी उन्होंने यह महसूस कर लिया था कि आधुनिक समाज तक स्वच्छ हवा पहुंचाने में लागत आएगी। अपने एक लेख "की टु हेल्थ" (स्वास्थ्य कुंजी) में उन्होंने साफ हवा कि जरूरत पर रोशनी डाली। इसमें साफ वायु पर एक अलग से अध्याय है जिसमें कहा गया है कि शरीर को तीन प्रकार के प्राकृतिक पोषण की आवश्यकता होती है हवा, पानी और भोजन लेकिन साफ हवा सबसे आवश्यक है। वह कहते हैं कि प्रकृति ने हमारी जरूरत के हिसाब से पर्याप्त हवा फ्री में दी है लेकिन उनकी पीड़ा थी कि आधुनिक सभ्यता ने इसकी भी कीमत तय कर दी है। वह कहते हैं कि किसी व्यक्ति को कहीं दूर जाना पड़ता है तो उसे साफ हवा के लिए पैसा खर्च करना पड़ता है। आज से करीब 100 साल पहले 1 जनवरी 1918 को अहमदाबाद में एक बैठक को संबोधित करते हुए उन्होंने भारत की आजादी को तीन मुख्य तत्वों वायु, जल और अनाज की आजादी के रूप में परिभाषित किया था। उन्होंने 1918 में जो कहा और किया था उसे अदालतें आज जीवन के अधिकार कानून की व्याख्या करते हुए साफ हवा,साफ पानी और पर्याप्त भोजन के अधिकार के रूप में परिभाषित कर रही हैं। 1930 के दशक के अंतिम दिनों में उन्होंने लोकतंत्र को परिभाषित करते हुए कहा था कि इसमें सभी नागरिकों को शुद्ध हवा और पानी उपलब्ध होना चाहिए। आज से 100 साल पहले साफ हवा पर गांधी की समझ, चिंतन और भारत की स्वतंत्रता व लोकतंत्र के प्रति उनके विचार आज इक्कीसवीं सदी में भी उन्हें समकालीन बनाते हैं।[3]

विचार-विमर्श

महात्मा गांधी के कई बयान हैं जिन्हें टिकाऊ विकास के लिए उनके विश्वव्यापी दृष्टिकोण के रूप में उद्धृत किया जा सकता है। यूरोपीय संघ के संदर्भ में दिए गए उनके एक बयान की प्रासंगिकता आज पूरे मानव समाज को है। उन्होंने 1931 में लिखा था कि

भौतिक सुख और आराम के साधनों के निर्माण और उनकी निरंतर खोज में लगे रहना ही अपने आप में एक बुराई है।

उन्होंने कहा कि मैं यह कहने का साहस करता हूं कि यूरोपीय लोगों को अपने दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करना होगा। इससे उनका काफी नुकसान होगा और वह **आरामतलबी के दास** बन जाएंगे। असल में यूरोपीय लोग अब गांधी जी की बातों को सुन रहें हैं। यह बात कुछ ब्रिटिश नागरिकों के दृष्टिकोण से भी स्पष्ट है जिन्होंने सरल जीवन जीने के लिए ऊर्जा और भौतिक संसाधनों पर से अपनी निर्भरता कम कर ली है। उन्होंने शून्य ऊर्जा इकाई (जीवाश्म) स्थापित की है, यह एक ऐसी प्रणाली है जिसके जरिए लंदन में एक हाउसिंग सोसाइटी चलाई जा रही है। सोसाइटी के प्रवेश द्वार पर लिखा है- यूके में एक व्यक्ति जितना उपभोग करता है अगर दुनिया का हर व्यक्ति इतना ही उपभोग करे तो सब की जरूरतों को पूरा करने के लिए हमें धरती जैसे तीन ग्रहों की जरूरत होगी। गांधीजी ने आठ दशक पहले ही लिख दिया था कि यदि भारत ने विकास के लिए पश्चिमी मॉडल का पालन किया तो उसे अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए एक अलग धरती की जरूरत होगी। लंदन की इस हाउसिंग सोसाइटी के लोग किसी भी जलवायु और पर्यावरण आंदोलन से नहीं जुड़े हैं और साथ ही वह अलग-अलग कामों और व्यवसायों से जुड़े हैं। ये सभी जीवंत मध्यम वर्ग का हिस्सा हैं। बस इन लोगों का खपत और उत्पादन दृष्टिकोण ही इन्हें दूसरों से अलग बनाता है।[4]

उन्होंने निर्णय ले रखा है कि दूरदराज के स्थानों से लाए जाने वाले खाद्य पदार्थ वे नहीं खाएंगे। उनका मानना है कि जब वस्तुओं को लंबी दूरी से ले जाया जाता है तो परिवहन, संरक्षण और पैकिंग में बहुत ज्यादा ऊर्जा का उपयोग किया जाता है। दूर स्थानों से भोजन के लाने और उन पर निर्भरता से काफी उर्जा का प्रयोग होता है जिसकी वजह से काफी अधिक मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड और ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन होता है इसलिए उन्होंने कुछ किलोमीटर के भीतर उपलब्ध पदार्थों के प्रयोग का निर्णय लिया है। जलवायु के अर्थशास्त्र पर यूके में निकोलस स्टर्न कमेटी रिपोर्ट ग्रीन हाउस गैस के कम उपयोग के साथ- साथ जीवन शैली में बदलाव करके एक कार्बन अर्थव्यवस्था से एक गैर कार्बन अर्थव्यवस्था में स्थानांतरित होने पर जोर देती है। गांधी जी ने कई अवसरों पर लिखा है कि मनुष्य जब अपनी भौतिक जरूरतों को पूरा करने के लिए 15 या 20 किलोमीटर से ज्यादा दूर के संसाधनों को प्रयोग करेगा तो प्रकृति की अर्थव्यवस्था नष्ट होगी। उनका स्वदेशी चिंतन और 1911 में "प्रकृति की अर्थव्यवस्था" वाक्यांश के निर्माण के जरिए ही प्रकृति के प्रति उनकी गहरी समझ और संवेदनशीलता को समझा जा सकता है।[12]

1928 में ही उन्होंने चेतावनी दी थी कि विकास और औद्योगिकता में पश्चिमी देशों का पीछा करना मानवता और पृथ्वी के लिए खतरा पैदा करेगा। उन्होंने कहा कि भगवान न करे कि भारत को कभी पश्चिमी देशों की तरह औद्योगिकीकरण अपनाना पड़े। कुछ किलोमीटर के एक छोटे से द्वीप इंग्लैड के आर्थिक साम्राज्यवाद ने आज दुनिया को उलझा रखा है। अगर सभी देश इसी तरह आर्थिक शोषण करेंगे तो यह दुनिया एक टिड्डियों के दल की तरह हो जाएगी। हम सभी 1930 के गांधी जी के ऐतिहासिक दांडी मार्च से परिचित हैं। इसके जरिए उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों पर आम लोगों के अधिकारों पर जोर दिया था। नमक एक महत्वपूर्ण और बुनियादी प्राकृतिक जरूरत है। ब्रिटिश साम्राज्य संसाधनों पर अपना एकाधिकार रखता था और उन्हें उनके वैध मालिकों की पहुंच से वंचित रखता था। बुनियादी संसाधनों से आम लोगों को दूर रखना उनकी अस्थिर विकास की रणनीति का हिस्सा था। नमक कानून तोड़कर और आम लोगों को नमक बनाने का अधिकार देकर उन्होंने उन्हें सशक्त बनाने का काम किया जो कि टिकाऊ विकास का केंद्रीय मुद्दा है। दांडी मार्च खत्म होने के बाद, उन्होंने अपने बड़े लक्ष्यों को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि इस मार्च का उद्देश्य भारत की आजादी से भी आगे जाकर दुनिया को भौतिकवाद के राक्षसी लालच के चंगुल से मुक्त करना है। यह एक शक्तिशाली बयान था जिसमें उन्होंने लालच पर आधारित आधुनिक सभ्यता की आलोचना के साथ साथ टिकाऊ विकास पर जोर दिया था।[5]

रचनात्मक रूप से अहिंसात्मक कार्रवाई की व्याख्या करते हुए उन्होंने सांप्रदायिक सद्भाव के साथ-साथ कई अन्य चीजों पर भी जोर दिया जैसे, आर्थिक समानता, अस्पृश्यता का उन्मूलन, लोगों के जीवन में प्रगतिशील सुधार, महिलाओं को मताधिकार, नि:शुल्क और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा प्रणाली में सुधार, ताकि साधारण लोगों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। यहां यह ध्यान देने योग्य है कि इनमें से अधिकतर मुद्दे रियो शिखर सम्मेलन के एजेंडा-21 के अभिन्न अंग हैं, जो टिकाऊ विकास के लिए एक ब्लूप्रिंट है। आधुनिक सभ्यता की कुछ विशेषताओं में एक विशेषता यह है कि गतिशीलता को बढ़ावा देने के लिए कारों और विमानों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। जोसेफ स्टिज़लिट्ज ने अपनी पुस्तक "मेकिंग ग्लोबलाइजेशन वर्क" में लिखा है 80 प्रतिशत ग्लोबल वार्मिंग हाइड्रोकार्बन और 20 प्रतिशत वनों की कटाई की वजह से होती है। सबको पता है कि पर्यावरण के लिए कारों की बढ़ती संख्या कितना बड़ा खतरा है। जब 1938 में गांधी जी को बताया गया कि अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति चाहते हैं कि उनके देश के हर नागरिक के पास दो कारें और दो रेडियो सेट हों तो महात्मा गांधी ने यह कहते हुए प्रतिक्रिया व्यक्त की थी कि

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 12, December 2016

अगर हर भारतीय परिवार में एक कार होगी तो सड़कों पर चलने के लिए जगह की कमी पड़ जाएगी। साथ ही उन्होंने आगे कहा था कि अगर भारतीय एक कार भी रखें तो यह कोई अच्छा काम नहीं होगा। दांडी मार्च के दौरान जब कुछ लोग कार पर संतरे लाए तो उन्होंने कहा था कि नियम होना चाहिए कि यदि आप चल सकते हो तो कार से बचो। कई यूरोपीय देश हैं जहां कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में कारों के प्रवेश पर टैक्स लगाया जाता है ताकि प्रदूषण को कम किया जाए। साथ ही यूरोप में कई अन्य देश हैं जहां कार फ्री दिन मनाएं जाते हैं। ऑड और ईवन के जरिए भी सड़कों पर कारों की संख्या को कम करने के कोशिश की जा रही है। ज्यादा कारों को रखने से होने वाले नुकसान पर गांधी जी ने जो चेतावनी दी थी उसे आज पुरी दुनिया महसूस कर रही है।[13]

परिणाम

दुनिया में अकाल और पानी की कमी के संदर्भ में महात्मा गांधी के विचारों को याद करना बहुत ही महत्वपूर्ण है। आजादी के लिए संघर्ष के दौरान वह गुजरात के काठियावाड क्षेत्र में होने वाले अकालों पर भी काफी चिंतित थे। पानी की कमी के मुद्दे पर उन्होंने सभी रियासतों को सलाह दी थी कि सभी को एक संघ बनाकर दीर्घकालिक उपाय करने चाहिए और खाली भूमि पर पेड़ लगाने चाहिए। उन्होंने बड़े पैमाने पर वनों के काटने का भी विरोध किया था। आज इक्कीसवीं सदी में गांधीजी की बात और भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो गई है। अंग्रजों ने वनों को बस धन कमाने का जरिया ही समझा था। इसके साथ ही गांधीजी ने वर्षा जल के संचयन पर भी जोर दिया। 1947 में दिल्ली में प्रार्थना में बोलते समय उन्होंने बारिश के पानी के प्रयोग की वकालत की थी और इससे फसलों की सिंचाई पर जोर दिया। किसानों पर 2006 में प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में स्वामीनाथन आयोग ने भी सिंचाई की समस्या को हल करने के लिए बारिश के पानी के उपयोग की सिफारिश की थी। ग्रीन पार्टी की संस्थापकों में से एक पेट्रा केली ने पार्टी की स्थापना में महात्मा गांधी के विचारों के प्रभावों को स्वीकार करते हुए लिखा है कि हम अपने काम करने के तरीकों में महात्मा गांधी से बहुत प्रेरित हुए हैं। हमारी धारणा है कि हमारी जीवन शैली इस तरह की होनी चाहिए कि हमें लगातार उत्पादन के लिए कच्चे माल की आपूर्ति होती रहे और हम कच्चे माल का उपयोग करते रहें। कच्चे माल के उपभोग से पारिस्थितिकी तंत्र उन्मुख जीवन शैली विकसित होगी और साथ ही अर्थव्यवस्था से हिंसक नीतियां भी कम होंगी। एक पुस्तक **"सर्विविंग द सेंचुरी: फेसिंग क्लाउड कैओस"** जो प्रोफेसर हर्बर्ट गिरार्डेट द्वारा संपादित की गई है, उसमें चार मानक सिद्धांतों अहिंसा, स्थायित्व, सम्मान और न्याय को इस सदी और पृथ्वी को बचाने के लिए जरूरी बताया गया है। धीरे-धीरे ही सही दुनिया गांधीजी और उनके उन सिद्धांतों को मान और अपना रही है जो सदैव उनके जीवन और कार्यों के केंद्र में रहें। द टाइम मैगजीन ने अपने 9 अप्रैल 2007 के अंक में दुनिया को ग्लोबल वार्मिंग बचाने के 51 उपाय छापे। इसमें से 51वां उपाय था कम उपभोग, ज्यादा साझेदारी और सरल जीवन। दूसरे शब्दों में कहें तो टाइम मैगजीन जैसी पत्रिका जिसे पश्चिमी देशों का मुख्यपत्र कहा जाता है, वह अब ग्लोबल वार्मिंग के खतरों को रोकने के लिए अब गांधीजी के रास्तों को अपनाने के लिए कह रही है। ये सब तथ्य बताते हैं कि पृथ्वी को बचाने के लिए गांधीजी की मौलिक सोच और उनके विचार कितने महत्वपूर्ण और गहरे हैं। इसलिए टिकाऊ और सतत विकास के लिए गांधी जी के विचारों को फिर से समझना अनिवार्य है।[6]

निष्कर्ष

महात्मा गांधी के प्रकृति चिन्तन से सम्बन्धित संदेश आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि उनके लेखों तथा विचारों में **पर्यावरण सम्बन्धी दृष्टिबोध** तथा पर्यावरण पर काम करने वालों के लिए कालजयी मार्गदर्शन मौजूद है इसलिये उपभोक्तावाद से त्रस्त अनेक लोग, गांधी दर्शन में मुक्ति तथा विकास का मार्ग खोज रहे हैं। आज से एक शताब्दी पूर्व 1909 में गांधीजी ने पश्चिमी समाज के आनन्द तथा समृद्धि की अंतहीन दौड़ को, समूची धरती तथा उसके संसाधनों के लिए गंभीर खतरा माना था। उनके लेखों को हिन्द स्वराज में संकलित किया गया है। इस पुस्तक में उन्होंने पश्चिमी समाज को, उनकी जीवनशैली के दुःप्रभावों के प्रति सचेत किया है। इसके साथ ही उन्होंने भारतवासियों से अनुरोध किया है कि वे भौतिक लाभों के लालच में न उलझें।

महात्मा गांधी जी के पर्यावरण से जुडें कुछ प्रसिद्ध उद्धरण निम्नानुसार हैं-

- पृथ्वी, सभी व्यक्तियों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त है किन्तु उनके लालच की पूर्ति के लिये नही।
- पृथ्वी, वायु, भूमि तथा जल हमारे पूर्वजों से प्राप्त सम्पत्तियाँ नहीं हैं। वे हमारे बच्चों की धरोहरें हैं। वे जैसी हमें मिली हैं वैसी ही उन्हें भावी पीढ़ियों को सौंपना होगा।
- विश्व में एक नियमितता है। जो भी अस्तित्व में होता है उसके नियमन के लिए अपरिवर्तनशील नियम है। अन्धा नियम, किसी भी मनुष्य के व्यवहार को नियमित नहीं कर सकता।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 12, December 2016

- हम, विश्व में वनों के प्रति जो कुछ कर रहे हैं वह केवल उसका प्रतिबिम्ब है, जो हम अपने तथा एक दूसरे के साथ करते हैं।
- जब तक मानव-संस्कृति के भौतिक नियमों के केन्द्र में अहिंसा नहीं होगी, हम प्रकृति के विरुद्ध हिंसा को रोकने के लिए, पर्यावरण सम्बन्धी गतिविधियाँ नहीं चला सकते।
- वन्य जीवन, वनों में कम हो रहा है किन्तु वह शहरों में बढ़ रहा है।
- विकास का त्रुटिपूर्ण ढांचा, गांवों से शहरों की ओर पलायन को प्रोत्साहित करता है।
- गांधीजी का दृष्टिकोण, पर्यावरण के प्रति व्यापक था। उन्होने देशवासियों से, तकनीकों के अन्धानुकरण के विरुद्ध, जागरूक होने का आवाहन किया था। उनका मानना था कि पश्चिम के जीवन स्तर की नकल करने से, पर्यावरण का संकट पनप सकता है। उनका मानना था कि यदि विश्व के अन्य देश भी आधुनिक तकनीकों के मौजूदा स्वरूप को स्वीकार करेंगे तो पृथ्वी के संसाधन नष्ट हो जायेंगे।[7]

महात्मा गांधी का प्रकृति चिन्तन

महात्मा गांधी ने अपने प्रकृति चिन्तन में निम्न बिन्दुओं को महत्व दिया था-

1. ग्रामों की आत्मनिर्भरता - ग्राम स्वराज
2. कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन
3. आयातित उपभोक्ता वस्तुओं पर नियंत्रण
4. कृषि में सुधार,
5. अक्षय समाज,
6. आर्थिक समानता,
7. अंहिसा तथा जीवों के प्रति संवेदना तथा
8. स्वच्छता।

इक्कीसवी सदी का मनुष्य, महात्मा गांधी के प्रकृति चिन्तन के विपरीत, अपनी नियति खुद गढ़ रहा है। वह अंतरिक्ष में कालोनी, रोबो द्वारा चलित मशीनें, कम्प्यूटर जैसी बुद्धि का विकास करने के लिये लगातार प्रयासरत है। उपरोक्त नियति निर्धारण के कारण, विश्व में उपभोग की प्रवत्ति तथा विविध उत्पादनों में अप्रत्याशित वृद्धि हो रही है जिसके कारण, वैष्विक पर्यावरण तथा स्थानीय मौसम पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। इसके उदाहरण हैं - वैश्विक ऊष्मता, ओजोन परत का ह्रास, अम्लीय वर्षा, समुद्र स्तर में वृद्धि, वायु, जल तथा भूमि संक्रमण और मरुस्थलों के क्षेत्रफल में हो रही वृद्धि। यह वही नियति है जिससे बचने की बात महात्मा गांधी ने अपने प्रकृति चिन्तन में कही है। गांधीजी की सोच, पर्यावरण के प्रति मैत्री पूर्ण थी।[8] उस सोच में समाज के अंतिम व्यक्ति के हितों का ध्यान रखा गया है। उनका विश्वास था कि गरीबी और प्रदूषण एक दूसरे के पोषक हैं। गांधी जी का सरल जीवन का नुस्खा, प्राकृतिक साधनों के असीमित उपभोग तथा अंतहीन शोषण पर रोक लगाता है। यह उनके पर्यावरण सम्बन्धी सोच का सबसे बडा उदाहरण है। महात्मा गांधी की उपरोक्त सोच उस कालखंड में विकसित हुई जब वैज्ञानिक जगत भी पर्यावरण के कुप्रभावों से लगभग अपरिचित था। महात्मा गांधी के अनुसार गरीबों का शोषण रोकने के लिये बड़े-बड़े उद्योग-धन्धों और ग्रामोद्योगों को साथ साथ संचालित करना चाहिये।

ग्राम उद्योग को प्रोत्साहन

गांधी जी का कहना था कि जहाँ मानव श्रम द्वारा काम संभव नही हों तभी जन उपयोगी भारी भरकम कामों को मशीनों से कराया जावे। कार्य, राज्य की अधिकारिता में हों तथा जन-कल्याण उसका उद्देष्य हो। केन्द्रीकृत तथा विकेन्द्रीकृत तरीकों से उत्पादन किया जाए। आय तथा धन का वितरण समान हो तथा जन साधारण के हित साधे जा सकें। गांधी जी के अनुसार, मशीनीकरण तभी उपयोगी है जब काम करने वाले व्यक्तियों की संख्या कम तथा जल्दी कार्य पूरा करने की अनिवार्यता हो। भारत में मजदूरों की संख्या बहुत अधिक है इसलिए मशीनों का उपयोग हानिकारक है। इस सोच के कारण, वे, मशीनों के प्रति अत्याधिक रूचि के खिलाफ थे। वे,

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 12, December 2016

ऐसे उपकरणों के पक्षधर थे जो अनावश्यक मानव - श्रम को कम करते हैं। वे, विशाल उत्पादन नही, अपितु बहु-श्रमिक उत्पादन चाहते थे।[9]

भारत में गरीबी, बेरोजगारी, आय की असमानता, भेद-भाव इत्यादि को देखते हुए गांधी जी ने चरखे के उपयोग को, प्रतीक के रुप में, प्रोत्साहित किया था। उनका उद्देष्य, खादी तथा ग्राम आधारित उद्योगों को प्रोत्साहित कर बेरोजगारी तथा गरीबी को कम करना था। गांधी जी का पूरा जीवन तथा उनके समस्त कार्य, मानवता के लिए पर्यावरण सम्बन्धी विरासत हैं। उन्होंने जीवन पर्यन्त, व्यक्तिगत जीवन शैली द्वारा, समग्र विकास की अवधारणा को प्रतिपादित किया। यद्यपि उनका लगभग सम्पूर्ण जीवन ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध संर्घष में बीता, किन्तु वे हमेषा प्रकृति तथा शान्ति से जुड़े रहे। उनकी ताकत, उनका आत्मबल था। उनका संदेश पर्यावरण संरक्षण तथा समग्र विकास आधारित था। उनके सन्देष, भारत ही नही अपित सम्पूर्ण विश्व के लिए आज भी उपयोगी हैं।

औद्योगीकरण एक अभिशाप

गांधीजी का सोचना था कि औधोगीकरण मानव जाति के लिए अभिषाप है। इससे लाखों नागरिकों को काम नहीं मिलेगा तथा प्रदूषण की समस्या उत्पन्न होगी। आधुनिक विकास के कारण हुई पर्यावरणीय हानि की अनेक बार क्षतिपूर्ति संभव नहीं होती। गांधीजी का विष्वास था कि कुटीर उद्योग तथा ग्राम उद्योग हजारों लोगों को सुविधायें तथा संसाधन उपलब्ध कराते हैं। उन्हे बढ़ावा देने से अनेक लोगों को काम मिलता है तथा राष्ट्रीय आय बढ़ती है। गान्धीजी का सोच था कि जीवित मषीनों को मृत मषीनों से मुकाबला नहीं करना चाहिये। गांधीजी का ग्रामीण संसाधनों पर आधारित माडल पर्यावरण को न्यूनतम हानि पहुँचाता है। उसके उपयोग से हुई पर्यावरणीय हानि का नवीनीकरण या सुधार संभव है।

आर्थिक समानता

गांघीजी का आर्थिक समानता तथा सम्पत्ति के समान वितरण का सिद्धान्त इस अवधारणा पर आधारित था कि प्रत्येक व्यक्ति के पास उसकी प्राकृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन होंगे। उन्होंने सम्पत्ति के समान वितरण का व्यावहारिक तरीका बताया था। इस तरीके के अनुसार हर व्यक्ति को अपनी आवश्यकतायें न्यूनतम रखनी होंगी। दूसरों की गरीबी का ध्यान रखना होगा।[10]

अहिंसा तथा जीवों के प्रति सम्वेदना

गांधीजी अनुभव करते थे कि हम प्रकृति के वरदानों का उपयोग तो कर सकते हैं किन्तु हमें उनको मारने का अधिकार नही है। गांधीजी यह भी मानते थे कि अहिंसा तथा सम्वेदना न केवल जीवों के प्रति बल्कि अजीवित या मृत पदार्थों के प्रति भी होना चाहिये। अजीवित पदार्थों का अतिदोहन जो लालच तथा ज्यादा लाभ के लिये किया जाता है वह जैवमण्डल को नुकसान पहुँचाता है। वह हिंसा है। इससे अन्य लोगों को जो उसका उपयोग करना चाहते हैं हानि होती है।

स्वच्छता

गांधीजी ने कहा था कि जीवन में स्वच्छता का स्थान सर्वोच्च है इसलिये गरीबी के कारण या उसकी आड़ में कोई भी शहर स्वच्छता की व्यवस्था से मुक्ति नहीं पा सकता। जो भी मनुष्य थूक कर वायु तथा जमीन को दूषित करता है या जमीन पर कचरा फेंकता है वह प्रकृति के विरुद्ध पाप करता है। हम स्नान करने में आनन्द महसूस करते हैं किन्तु कुआ जलाशय अथवा नदी को मल त्याग द्वारा गंदा करते हैं। हमें इन आदतों को पापाचार मानना चाहिये। हमारी उपरोक्त आदतों के कारण हमारे गांव तथा नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं। ऐसी अस्वच्छता बीमारियों का प्रसार करती हैं।

गांधीजी का पर्यावरणवाद नैतिक सिद्धान्तों पर आधारित था। गांधीजी का अपनी देह तथा दिमाग पर पूर्ण नियंत्रण था। इसलिए उन्होंने कभी भी ऐसा कोई उपदेश नही दिया जिसका वे अपने व्यक्तिगत जीवन में स्वयं पालन नहीं करते हों। यही उनका प्रकृति चिन्तन है।[14]

संदर्भ

1. "पुनर्चक्रण 101". मूल से 29 जनवरी 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 28 जनवरी 2011.
2. ↑ पुनर्चक्रण". 15 जून 2009 को पुनःप्राप्त. http://earth911.com/recycling/ Archived 2011-01-29 at the Wayback Machine. "Recycle.gif". 15 जून 2009 को पुनःप्राप्त. http://library.uwf.edu/recycle_logo.gif Archived 2012-11-

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 12, December 2016

23 at the Wayback Machine "जल शोधन क्या है". 16 जून 2009 को पुनःप्राप्त, http://www.bionewsonline.com/s/what_is_water_purification.htm Archived 2012-06-21 at the Wayback Machine "निकासी उपचार". 17 जून 2009 को पुनःप्राप्त http://www.euwfd.com/html/sewage_treatment.html Archived 2009-03-26 at the Wayback Machine "पर्यावरण उपचार और जल संसाधन

3. ↑ ताजा हवा को कैसे बढाने के लिए कमल मिएटल Archived 2011-06-06 at the Wayback Machine टेड (TED) (सम्मेलन)
4. ↑ "निकासी उपचार". 17 जून 2009 को पुनःप्राप्त http://www.euwfd.com/html/sewage_treatment.html Archived 2009-03-26 at the Wayback Machine "पर्यावरण उपचार और जल संसाधन
5. ↑ लाइवसाइंस. 27 जून 2009 को पुनःप्राप्त. 10 शीर्ष उभरते पर्यावरण प्रौद्योगिकियां .http://www.reference.md/files/D052/mD052918.html Archived 2011-06-10 at the Wayback Machine
6. ↑ 16 जून 2009 को पुनःप्राप्त. http://www-esd.lbl.gov/ERT/index.html Archived 2009-06-12 at the Wayback Machine "शहरी अपशिष्ट प्रबंधन". 16 जून 2009 को पुनः प्राप्त. http://web.worldbank.org/WBSITE/EXTERNAL/TOPICS/EXTURBANDEVELOPMENT/EXTUSWM
7. ↑ 21 सितंबर 2009 को पुनःप्राप्त. एनआरईएल (NREL) आधिकारिक वेबसाइट Archived 2011-01-29 at the Wayback Machine
8. ↑ टेसलर, आर. (1990-1991) जलवायु और बिल्डिंग ऊर्जा प्रबंधन. ऊर्जा और इमारत, खंड 15-16, पीपी 599 - 608.
9. ↑ संयुक्त राज्य अमेरिका पेटेंट 6098893 Archived 2010-12-16 at the Wayback Machine मौसम पूर्वानुमान आंकड़े को शामिल करते हुए सुविधा नियंत्रण प्रणाली और ऐसे प्रणाली को प्रवर्तन करने के लिए एक विधि (इन्वेन्टर स्टेफन बर्गलंड)
10. ↑ नॉर्मन, जिम. "कहां तेल की कमी कभी नहीं है। Archived 2018-07-07 at the Wayback Machine" न्यूयॉर्क टाइम्स. 13 मई 2007.
11. ↑ टिलमैन, एड्रिएन. "ग्रीज़स्टॉक फेस्टिवल रिटर्न्स, बिगर एंड बेटर Archived 2008-05-18 at the Wayback Machine". 14 मई 2008.
12. ↑ "ग्रीज़स्टॉक 2008 Archived 2008-05-29 at the Wayback Machine". ग्रीज़स्टॉक Archived 2008-05-29 at the Wayback Machine . 20 मई 2008 को पुनःप्राप्त.
13. ↑ मैक्स, जोश. "गैस गजलर्स बिकम वेजी डिलाइट्स एट ग्रीज़स्टॉक इन यॉर्कटाउन हाइट्स Archived 2011-08-05 at the Wayback Machine". डेली न्यूज़ . 13 मई 2008.
14. ↑ "ग्रीज़स्टॉक 2008: वैकल्पिक ईंधन, मज़ा और फ्रेंच फ्राइज़ Archived 2008-05-29 at the Wayback Machine". प्राकृतिक जागरण Archived 2011-02-02 at the Wayback Machine . मई 2008.